दिनांक : 16-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ॰ फ़ारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय : प्राचीन इतिहास

इकाई :- दो

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- संगम काल स्रोत

चेर राज्य : चेरों को केरलपुत्र भी कहा जाता है। इनका राज्य पांड्यों के राज्य के पश्चिम और उत्तर में स्थित था। इस राज्य क्षेत्र में समुद्र तथा कोंकण पर्वतमाला के बीच की भूमि की सँकरी पट्टी शामिल थी। चेरों के अन्य पर्यायवाची नाम भी थे जैसे, वनावर, विल्लवर, कुडावर, कट्टुवर, मलैयार आदि।

प्रथम चोर शासक उदियंजील (उदियन जेराल ई०पू०)
के संबंध मे कहा जाता है कि उसने कुरुक्षेत्र मे भाग
लेने वाले सभी योद्धाओ को भोजन दिया। अतः उसे महाभोज
उदयिन जेरल की उपाधि मिली थी।
नेदुंजेराल आदन : उसका उत्तराधिकारी था। उसने माला
बार तट पर यवनों से सामुदायिक युद्ध कर उसे बंदी बना
लिया। इसके अलावा भी उसने कई शासको को पराजित
किया तथा अधिराज की उपाधि ली। उसकी दूसरी उपाधि
इमैवरैयन थी जिसका अर्थ होता है। जिसकी सीमा हिमा
लय तक थी।
वह संपूर्ण भारत को भी जीतने का दावा करता है। उसकी
राजधानी का नाम मरूदई था
अपने समकालीन चोल राजा के साथ उसने एक लड़ाई लड़ी
जिसमें दोनों ही राजा वीरगति को प्राप्त हुए तथा उनकी
रानियाँ सती हो गई।

Scanned with CamScanner

अदान का छोटा भाई कुट्टुवन (अनेक हाथियों का स्वामी) था। इसने कोंगु का क्षेत्र जीत कर चेर राज्य क्षेत्र को पश्चिमी से पूर्वी समुद्र तट तक फैलाया। इसने भी अधिराज की उपाधि ली।

आदान का दूसरा पुत्र शेनगुट्टुवन (न्याय परायण) 180 ई० मे शासक बना। परनर नामक कवि द्वारा इसका यश वर्णन किया गया है। इसने भी अधिराज की उपाधि ली तथा सात राजमुकुटो की माला धारण की। वह (किलो परनर के अनुसार इसके पास बड़ी नौसैनिक बेड़ा था। इसने कन्नगी पूजा अथवा पत्नी पूजा प्रारंभ की माना जाता है कि पत्नी पूजी की मूर्ति के लिये पत्थर किसी आर्य शासक को पराजित कर तथा गंगा से धोकर लाया गया था।

शिल्पादिकारम मे कन्नगी पूजा की उल्लेख है। इसके

Scanned with CamScanner

अनुसार कन्नागी पूजा के प्रारम्भ को माना जाता है कि पत्नी पूजा की मूर्ति के पूजा के लिये पत्थर किसी आर्य शासक को पराजित कर तथा गंगा से धोकर लाया गया शिलप्पादिकारम में कन्नगी पूजा का उल्लेख है। इसके अनुसार कन्नगी पूजा के प्रारंभ में पांड्य तथा चोल शासको के साथ श्रीलंका के शासक गजबाहु तथा श्रीलंकाई कवि इलम्बोधियार भी सहायक हुए थे। तमिल लेखो मे श्रीलंका को ईलम कहा गया है। उदियनजेरल वंश के शासको के समकालीन अन्य शासको मे अन्दुबन तथा उसके पुत्र शेल्वककडुन्गो वाली आदान का नाम प्रमुख है। इनमें से प्रथम को बहुश्रुत विद्वान तथा दूसरे को वैदिक यज्ञ करने वाला बताया गया। अन्य शासको मे आय तथा परि महत्वपूर्ण थे। आयने उरैयपुर के एक ब्राह्मण कवि

Scanned with CamScanner

को उदारतापूरवक संरक्षण दिया तथा पारि ने कपिलर

नाम अन्य ब्राह्मण विद्वान को संरक्षण दिया। आय तथा

पारि वेल शासक थे जिनका उत्पत्ति उत्तर भारत के

किसी ऋषि के अग्निकुंड से हुई मानी जाती है। सम्भवतः

उसकी उत्पत्ति का सिद्धांत बढ़ते आर्य प्रभाव का द्योतक है

कांची पुरम के शासक तोण्डैमान अपनी उत्पत्ति विष्णु

से मानते थे। यह शासक चोल शासक करिकाल के समय का था

एक चेर शासक आदिग - इमान उर्फ नदुमानअंजि था

यह विद्वानों का संरक्षक था तथा उसे दक्षिण भारत

में गन्ने की खेती शुरू करने का श्रेय दिया जाता है

यह दक्षिण की सुविख्यात कवयित्री औवइयार का

संरक्षक था। एक अन्य शासक शेय था। जिसे हाथी

जैसे आँखो वाला कहा जाता था। इसकी उपाधि मान्द

रंजीरल इरूमपोरई थी।

अंतिम चेर शासक कुडक्को इलं चेरल था। चेरो की राजधानी करूपुर अथवा वांजी पुर थी तथा राजकीय चिह्न धनुष या

चोल राज्य

चोल वंश की प्रथम जानकारी कात्यायन की वर्तिका से मिलती है। महाभारत संगम साहित्य पेरीप्लस तथा टॉलेमी के विवरण भी जानकारी के उल्लेखनीय स्त्रोत है। चोलो को अन्य पर्यायवाची नामो से भी पुकारा जाता था यथा- सेनई सेम्बि दास, बलावन किल्लि।

प्रथम चोल शासक इलंजेतचेन्नी था। यह एक वीर तथा कठिन योद्धा था। इसे अनेक सुंदर रथो वाला बताया गया है। इसी ने उरैयपुर को अपनी राजधानी बनाया जो कि पहले उत्तरी मनलूर मे थी। कालांतर मे तांजावुर तंजौर भी राजधानी बनी।

चोल राजाओ मे करिकाल का नाम प्रमुख है। यह इलजेत चेन्नी का दोस्त का पुत्र था।

Scanned with CamScanner

उसके बारे मे कहा जाता है कि जब वह खुले समुद्र मेंजहाज चलाता था तो हवा भी उसके अनुसार बहने को बाध्य होती थी।

करिकाल का शाब्दिक अर्थ होता है जले टांगो वाला इसे सात स्वरो का ज्ञाता भी कहा जाता है। इसी ने कावेरी नदी के मुहाने पर पुहार की स्थापना की थी जो आगे चलकर प्रमुख बंदरगाह नगर बना।

पटिनपप्पलै के लेखक ने उसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है करिकाल ने इस लेखक को 16 लाख मुद्राएँ भेंट मे दी। करिकाल ने उद्योग धंधो तथा कृषि के विकास मे विशेष रूचि ली।

करिकाल ने कावेरी नदी के किनारे 160 किलोमीटर लंबा बांध श्रीलंका से बंदी बनाकर लाये गए गुलामो द्वारा बनवाया। संगम स्त्रोतो मे दूसरी सदी ई० पू० को एक चोल शासक बनाया।

Scanned with CamScanner